धर्मामीटर

(धर्मों की नापतोल करने वाला मापक)

- धर्मराज

धर्मामीटर क्या है?

जिस तरह से वातावरण के तापमान को मापने के लिए थर्मामीटर का इस्तेमाल होता है, उसी तरह धर्म की उपयोगिता को धर्मामीटर द्वारा अच्छी तरह से समझा जा सकता है। जैसे हमें जीने के अनुकूल तापमान की जरूरत होती है, वैसे ही हमें एक अनुकूल धर्म की आवश्यकता होती है। जैसे अधिक तापमान में नुकसान हो सकता है, लू लगने से मृत्यु भी हो सकती है और कम तापमान में शीत लहर जान भी ले सकती है, उसी प्रकार से धर्म के अनुकूल ना होने से जीना दूभर हो जाता है।

धर्म हमें जीने का रास्ता बतलाता है। धर्म मनुष्य के लिए है ना कि मनुष्य धर्म के लिए। जिस तरह से हम अपने बच्चों को उसी स्कूल में भेजना चाहते हैं, जिसे हम अच्छा समझते हैं। कोई हमें जबरदस्ती किसी खास स्कूल में पढ़ने के लिए मजबूर नहीं कर सकता है। उसी प्रकार से हमें किसी भी धर्म को जिसको हम अच्छा समझते हैं, अपनाने की आजादी होती है। धर्मामीटर हमें सबसे ज्यादा लाभदायक धर्म के बारे में बताता है।

धर्म के मापक

(1) मानवता:- यह धर्म का सबसे बड़ा मापक है। मानव जाति सर्वोपरि है। मनुष्य को मनुष्य समझना ही मानवता या इंसानियत कहलाता है। कौन सा धर्म मानवता में विश्वास रखता है और कितना विश्वास रखता है, इससे ही उस धर्म की अच्छाई या बुराई सिद्ध होती है।

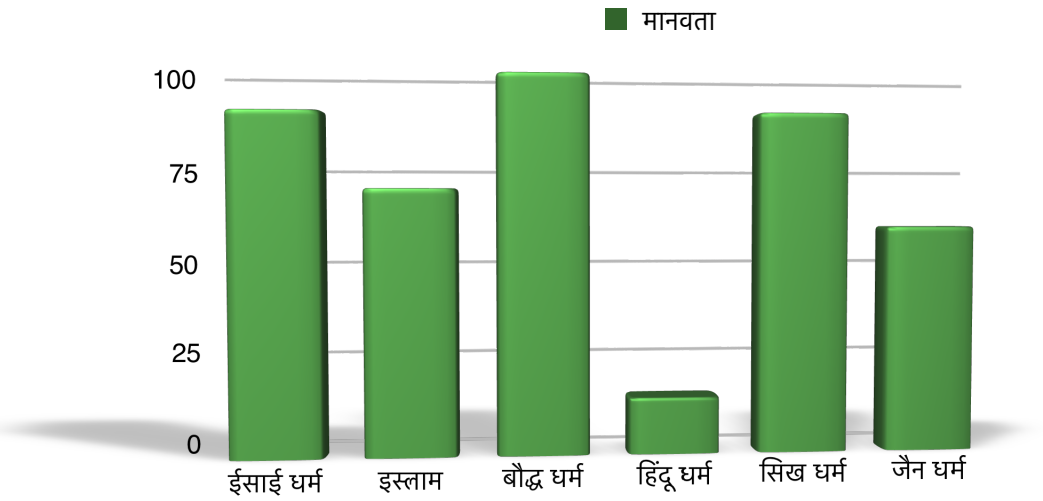

हिन्दू धर्म में चार वर्ण हैं जिसमें से प्रथम तीन वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य (15%) के पास ही मानवीय अधिकार है। शूद्रों के पास मानवीय अधिकार नही हैं।

(2) समानता:- मनुष्य को मनुष्य समझना, सभी मनुष्यों का सम्मान करना, उनमें कोई रंगभेद या जातिभेद ना करना, ऊंच-नीच ना मानना, छुआछूत ना मानना समानता को दर्शाता है। जो धर्म समानता के सिद्धांत को जितना स्वीकार करता है, वह उतना ही मानव के लिए कल्याणकारी होता है। समानतावादी धर्म मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण में विश्वास नही करता है।

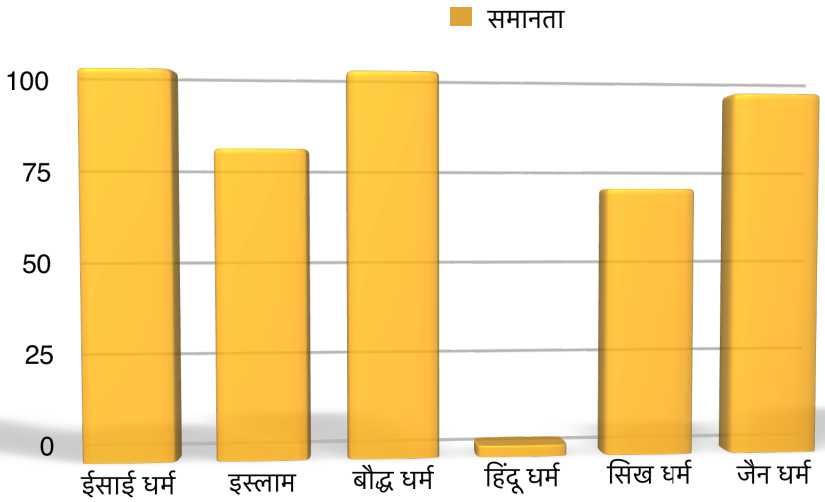

हिन्दू धर्म में चार वर्णों में ब्राह्मण (3%) ही अपने आप को सर्वोच्च समझते हैं और आपस में बराबरी रखते हैं। वे बाकी सबको नीच और कम बुद्धि वाला समझते हैं।

(3) एकता:- धर्म के अच्छे सिद्धांतों से मनुष्यों में एकता स्थापित होती है जिससे वे मजबूती से आगे बढ़ते हैं, उन्नति करते हैं और दुश्मनों का भी एकजुट होकर मुकाबला कर सकते हैं।

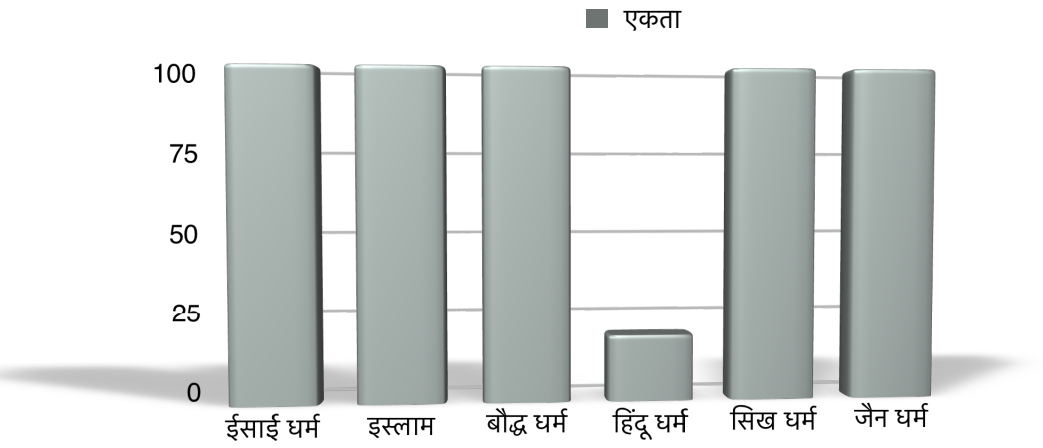

हिन्दू धर्म को छोड़कर बाकी सभी धर्म के लोग आपस में भेदभाव न होने के कारण पूरी तरह से एक रहते हैं। हिन्दू धर्म में लोग वर्णो और जातियों में विभाजित हैं, एक दूसरे से घृणा करते हैं, एक दूसरे के साथ खान-पान और शादी विवाह भी नही करते। घोर असहनशील व वंशवादी होने के कारण परशुराम ब्राह्मण ने छोटी सी बात पर सब निर्दोष क्षत्रियों का भी कत्ल कर दिया था।

(4) भाईचारा:- एक दूसरे से प्रेम और मदद की भावना को भाईचारा कहा जाता है। इस दुनिया में कुछ लोग लोग धनी तो कुछ लोग बहुत गरीब हो जाते हैं। गरीब और असहाय की मदद करना, उन्हें खाना और शिक्षा देना, उनके जीवन को बेहतर बनाना ही भाईचारा है।

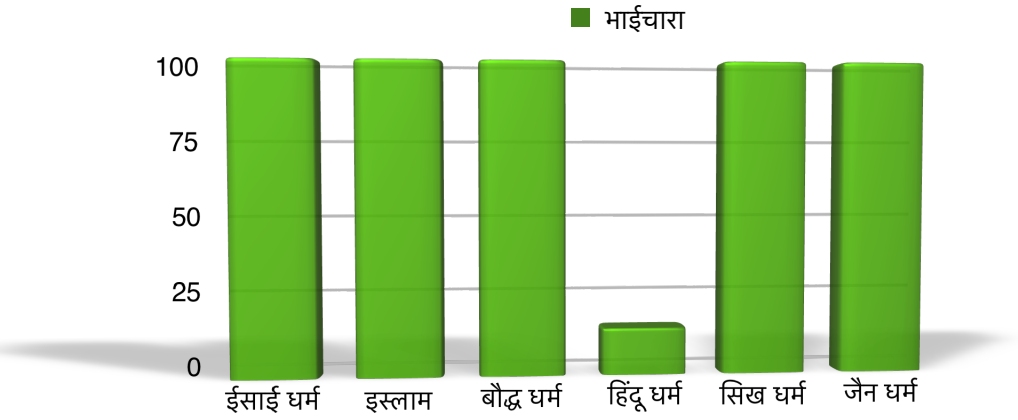

ईसाई लोग चर्च में एक साथ बैठ कर पूजा कर लेते हैं, इस्लाम में राजा और फकीर एक साथ बैठ कर नवाज पढ़ सकते हैं, बौद्धों में कोई भेद-भाव नही है, सिखों में गरीबों को लंगर कराया जाता है। दूसरी और हिन्दू मंदिरों में अधिक पैसे वाले को विशेष दर्शन और गरीबों (दलितों) को तो दूर से ही दुत्कार दिया जाता है, लंगर का तो सवाल ही नही।

(5) शिक्षा व प्रेरणा:- हर धर्म कोई-न-कोई शिक्षा और सिद्धांत प्रतिपादित करता है जो कि प्रेरणादायक होते हैं और मनुष्य तथा समाज के लिए कल्याणकारी होते हैं। इनसे मनुष्य के जीवन में सुख और शांति मिलती है।

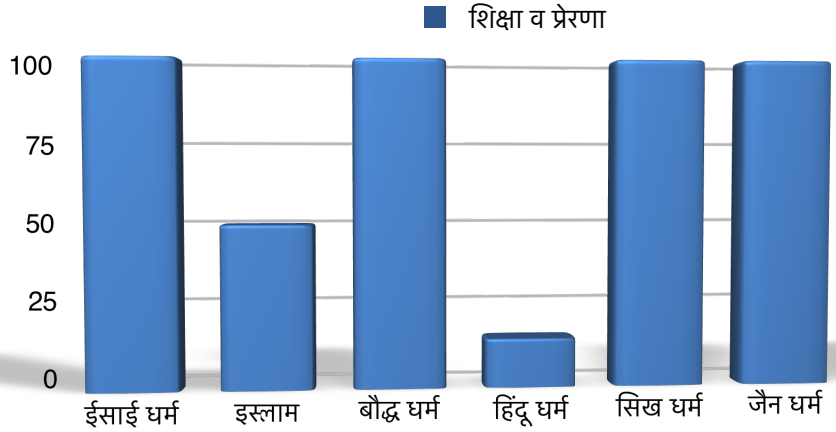

ईसाई धर्म हत्या, चोरी, बेईमानी और व्याभिचार न करने की शिक्षा देता है। इस्लाम गरीबों, जरूरतमन्दों को मदद की शिक्षा देता है। बौद्ध धर्म पंचशील, मानवता व करुणा की शिक्षा देता है। हिन्दू धर्म ऊँच-नीच व भेदभाव की शिक्षा देता है। सिख धर्म समानता, भाईचारे व अंधविश्वास न मानने की शिक्षा देता है। जैन धर्म सत्य, अहिंसा व विरक्त रहने की शिक्षा देता है।

(6) व्यापकता:- किसी धर्म की जगह जगह उपस्थिति उस धर्म की व्यापकता को दर्शाती है। अच्छा धर्म अधिक व्यापक होता है और ज्यादा से ज्यादा लोगों को स्वीकार्य होता है।

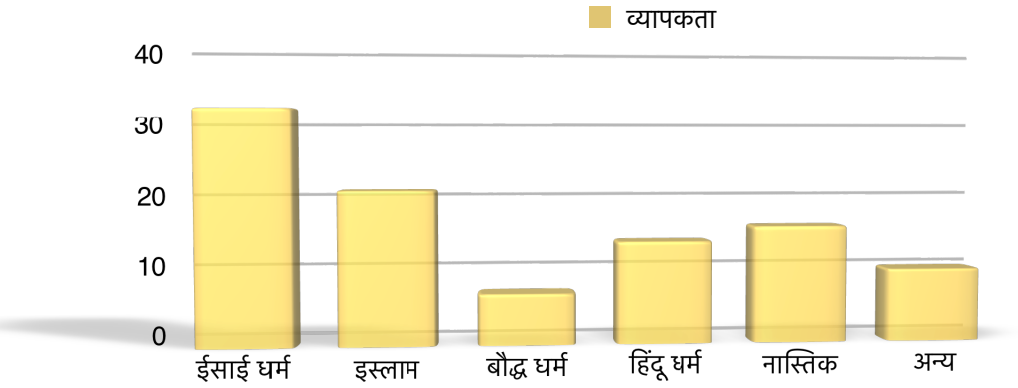

व्यापकता के हिसाब से ईसाई धर्म 126 देशों में, इस्लाम 54 देशों में, बौद्ध धर्म 8 देशों में और हिंदू धर्म 2 देशों में बहुमत में है यानि कि इतने देशों में 50% से अधिक जनसंख्या इन धर्मों को मानती है।

बौद्ध धर्म के बहुमत वाले 8 देश हैं - कम्बोडिया, थाईलैंड, मयान्मार, भूटान, श्रीलंका, जापान, लाओस, और मंगोलिया।

हिंदू धर्म के बहुमत वाले 2 देश हैं - भारत और नेपाल।

(7) सरलता:- धर्म को सरल होना चाहिए। धर्म जितना अधिक जटिल होगा उतना अधिक लोगों को भ्रमित करेगा। आसानी से समझ में आने वाला धर्म समाज के लिए कल्याणकारी होता है।

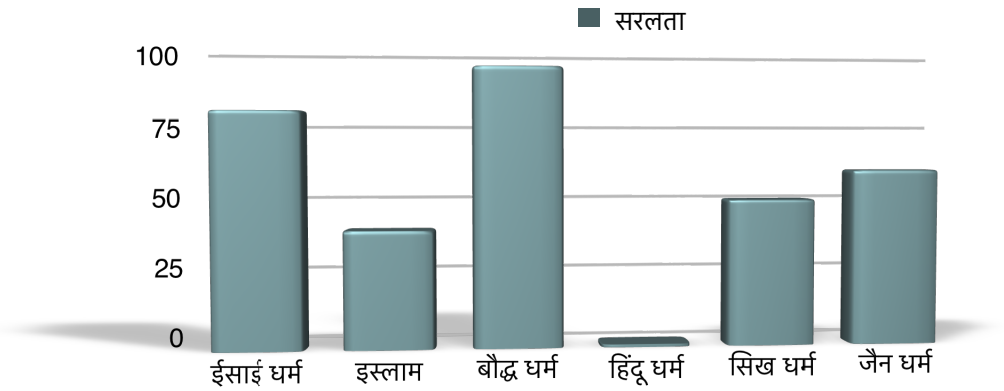

बौद्ध धर्म सबसे सरल व समझ में आने वाला है।

हिन्दू धर्म सबसे जटिल और कन्फ्यूजन पैदा करने वाला धर्म है, इसमें करोड़ों देवता बताये जाते हैं पर उनके नाम की सूची किसी के पास नही है। इसमें न ही कोई एक धर्म ग्रन्थ है, न ही कोई मानवता वादी सिद्धान्त। दुनिया में यही एक ऐसा धर्म है जिसमें लोग अपने ही धर्म के लोगों (शूद्रों) पर दुश्मनों से भी ज्यादा अत्याचार करते हैं। समाज जाति व्यवस्था के नाम से बंटा हुआ है।

(8) वैज्ञानिकता:- धर्म मनुष्य के विकास के लिए होता है। आज ट्रेन, हवाई जहाज, कंप्यूटर आदि सभी वैज्ञानिक सोच के कारण है। वैज्ञानिक सोच कम होगी तो देश पीछे जाएगा। वैज्ञानिक सोच अधिक होगी तो देश उन्नति करेगा और सभी लोगों का फायदा होगा।

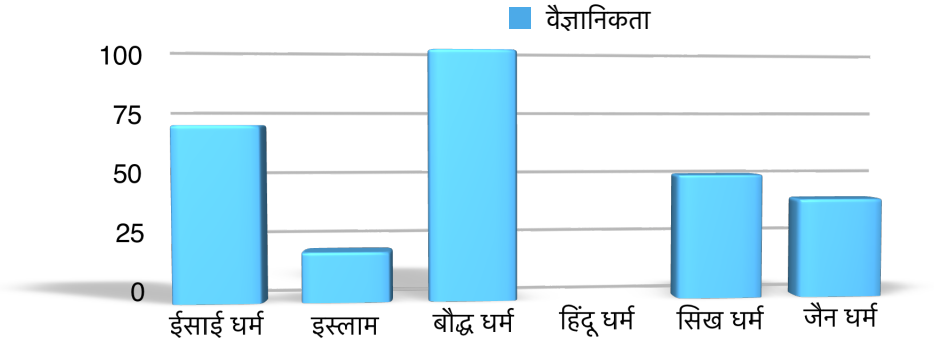

विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक आइन्स्टीन ने बौद्ध धर्म को एक वैज्ञानिक और भविष्य का धर्म बताया। बौद्ध धर्म के अनुसार हर चीज का एक कारण होता है, कोई भी चीज अपने आप बिना कारण नही होती। अगर हम कारण समझ ले तो हर समस्या का सामाधान हो सकता है। बाकी धर्मों में पूजा प्रार्थना के बिना काम ही नही बनता। हिन्दू धर्म में तो समस्या का कारण पूर्वजन्म के कर्मों को समझा जाता है, जो कि बिल्कुल अवैज्ञानिक है।

(9) अंधविश्वास:- किसी पर बिना सोचे समझे विश्वास कर लेना अंधविश्वास कहलाता है जैसे कि बिल्ली के रास्ता काट जाने से अशुभ होता है। तर्क का इस्तेमाल ना करना अंधविश्वास का कारण होता है। मनुष्य का सबसे अधिक नुकसान अंधविश्वास ही करते हैं। यह वैज्ञानिकता के विरुद्ध होते हैं व मनुष्य, समाज और देश को बहुत पीछे धकेल देते हैं।

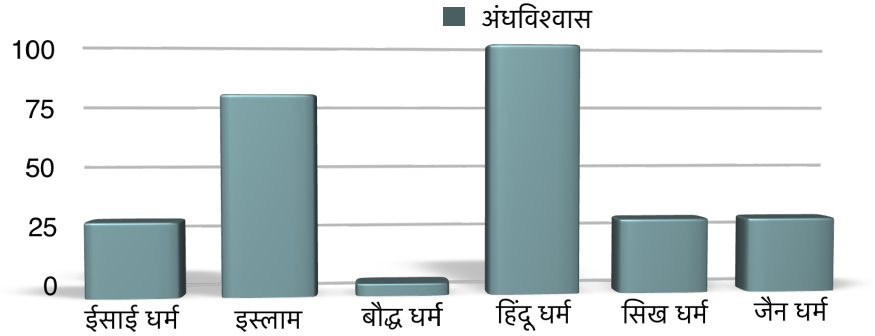

पूरी दुनिया में हिन्दू धर्म में ही सबसे ज्यादा अंधविश्वास भरा हुआ है। दलित की छाया पड़ने से ब्राह्मण अशुद्ध हो जाता है। ब्राह्मण ब्रह्मा के मुंह से पैदा हुआ है और शूद्र उनके पैरों से तो क्या ब्रह्मा के पैर अशुद्ध हैं? क्या ब्रह्मा के पैर छूने से भी ब्राह्मण अशुद्ध हो जायेगा? हिन्दू धर्म की कोई भी कहानी तर्क संगत नही है।

(10) कट्टरवाद:- अपने धर्म को अच्छा समझना और दूसरे धर्म को खराब समझना कट्टरवाद को दर्शाता है। बिना दिमाग का प्रयोग किए किसी बात को अच्छा ठहराना और किसी बात को बुरा ठहराना कट्टरवाद कहलाता है। कट्टरवाद तर्क की कसौटी पर खरा नहीं उतरता तथा समाज, देश और दुनिया के लिए हानिकारक होता है।

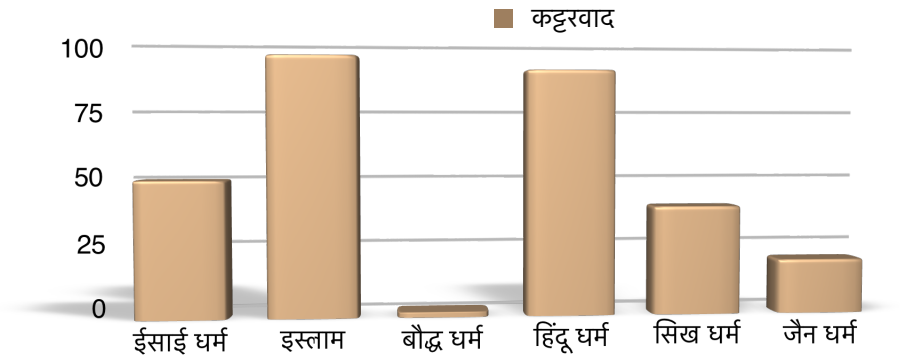

ईसाई धर्म में बाईबिल किसी और धर्म के अस्तित्व को स्वीकार नही करती। इस्लाम में अल्लाह को नहीं मानने वाले को काफिर कहते हैं। बौद्ध धर्म ने हिन्दुओं की वर्णव्यवस्था को नही माना। हिन्दू मुगलों के अत्याचारों का हिसाब उनकी आज की पीढ़ियों से लेना चाहते हैं।

विश्लेषण

धर्मामीटर के आधार पर सभी धर्मों का मूल्यांकन करने की कोशिश की गई है। इसमें 5% कम या ज्यादा की गलती हो सकती है। इस पुस्तक को निष्पक्ष होकर और बिना किसी पूर्वाग्रह के पढ़ें तभी समझना आसान होगा।

ऊपर धर्म को मापने के लिए 10 मापकों का इस्तेमाल किया गया है जिसमें 8 अच्छे गुणों वाले जैसे मानवता, समानता, एकता, भाईचारा, शिक्षा, व्यापकता, सरलता, वैज्ञानिकता मापक तथा 2 बुरे गुणों वाले जैसे अंधविश्वास, कट्टरवाद मापक हैं।

विश्लेषण के लिए 8 अच्छे गुणों वाले मापकों में प्राप्त नम्बरों के औसत से 2 बुरे गुणों वाले मापकों में प्राप्त नम्बरों के औसत को घटाने पर धर्म की अच्छाई या बुराई के बारे में पता चल जाता है। उदाहरण के लिए, ईसाई धर्म के अच्छे पॉइन्टस् 90 +100 +100 +100+ 100 + 32+ 80+ 70 = 672/8 = 84

बुरे पॉइन्टस् 30+50 = 80/2 = 40

अच्छाई / बुराई = 84 - 40= +44 (अच्छा)

उपर्रोक्त आधार पर विभिन्न धर्मों की अच्छाई व बुराई को निम्न प्रकार से दिखाया जा सकता है:-

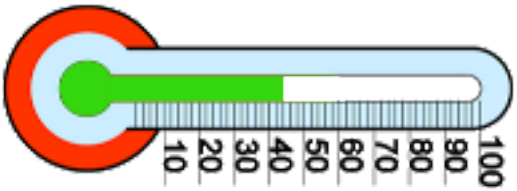

ईसाई धर्म = + 44 (अच्छा)

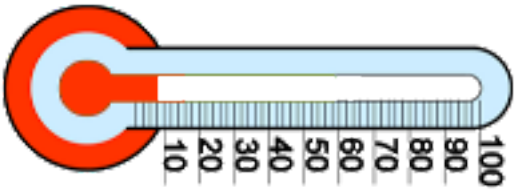

इस्लाम = - 7.5 (नुकसानदायक)

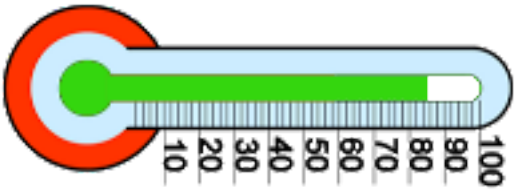

बौद्ध धर्म = + 84 (बहुत अच्छा)

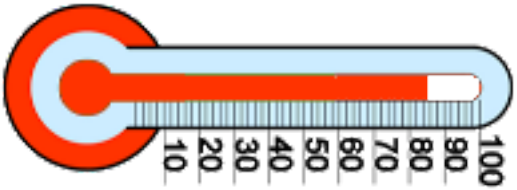

हिंदू धर्म = - 85 (बहुत नुकसानदायक)

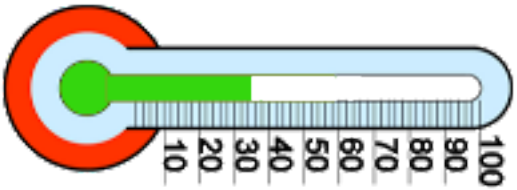

सिख धर्म = +35 (ठीक)

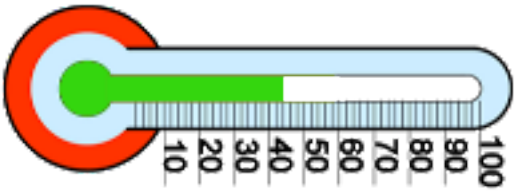

जैन धर्म = +44 (अच्छा)

निष्कर्ष

मनुष्य धर्म के लिए नहीं बल्कि धर्म मनुष्य के लिए होता है, उसके विकास के लिए होता है। कुछ धर्म मनुष्य के शोषण के लिए बने होते हैं, उनमें कुछ वर्णों (जातियों) का ही फायदा होता है। जैसे हिन्दू धर्म में मुख्य फायदा केवल 3% लोगों (ब्राह्मणों) को ही होता है। बाकी लोग कन्फ्यूजन में ही इस धर्म को मानते हैं। ऐसे धर्म को पहचानना चाहिए और छोड़ देना चाहिए। खराब धर्म को छोड़कर अच्छे धर्म को अपनाना यानी कि धर्म परिवर्तन कोई अपराध नहीं बल्कि अच्छाई के लिए ही होता है।

आमतौर पर कोई व्यक्ति जिस धर्म में पैदा होता है उसे उसी धर्म का समझा जाता है। माता पिता का धर्म मिलना व्यक्ति की अपनी पसंद नहीं बल्कि मजबूरी है। अपने धर्म की बखूबी जांच करनी चाहिए, उसे तर्कों के तराजू पर तौलना चाहिए। अगर वह आपकी उन्नति में बाधक है तो उचित धर्म को अपना लेना चाहिए। इससे किसी तरह का कोई नुकसान नहीं होगा।

शंकायें और समाधान

धर्म के बारे में लोगों के दिमाग तरह तरह की प्रश्न या शंकायें उठते रहते हैं। उनमें से कुछ शंकायें और उनके समाधान नीचे दिए हुये हैं :-

प्रश्न (1) - धर्म एक व्यक्तिगत पसन्द का विषय होता है। यह एक व्यक्तिगत चीज है इसलिए इसमें किसी का दखल नहीं होना चाहिए।

उत्तर - इसका उत्तर देने से पहले मैं व्यक्तिगत पसन्द को परिभाषित करना चाहूंगा। व्यक्तिगत पसन्द का मतलब है कि हम जिस चीज को अच्छा समझें, उसे ले सकें। उदाहरण के तौर पर अपनी पसन्द के कपड़े, खाना, रिश्ता-विवाह आदि।

अब मेरा प्रश्न हैं कि अगर धर्म व्यक्तिगत है तो क्या जाति भी व्यक्तिगत होती है। क्या आप अपनी मनपसन्द की जाति चुन सकते हैं? अगर नहीं चुन सकते तो ये व्यक्तिगत चीज नही बल्कि मजबूरी है। इसलिए ऐसे धर्म को चुने जिसमें जाति न हो। मनपसन्द धर्म को चुनना सम्भव है पर मनपसन्द जाति को चुनना असम्भव।

भारत में हिन्दू धर्म में जिस प्रकार से जाति नहीं बदली जा सकती, उसी प्रकार से पहले धर्म भी नहीं बदला जा सकता था। भारतीय संविधान में धर्म परिवर्तन की आजादी दी गयी है। आप जाति नहीं बदल सकते लेकिन धर्म जरूर बदल सकते हैं और धर्म बदलने के बाद उस जाति से मुक्ति मिल सकती है।

प्रश्न (2) - मैं किसी भी धर्म को नही मानता।

उत्तर - दुनिया में 112 करोड़ (16%) लोग ऐसे हैं जो किसी भी धर्म को नहीं मानते, इसका मतलब ये नही है कि वे जल्दी मर जाते हैं। वे भी अच्छी तरह से ही जीते हैं। नास्तिक होना कोई अपराध नही है। लेकिन वास्तव में नास्तिक होना चाहिए यानी कि शादी कोर्ट में करे, दाह संस्कार इलेक्ट्रिक क्रिमेटोरियम में करें इत्यादि।

प्रश्न (3) - मैं सब धर्मों को मानता हूँ।

उत्तर - ऐसा कुछ हिन्दू लोग अपनी जाति छिपाने के लिए और बात को टालने के लिए करते हैं। सभी धर्मों का आदर करना अच्छी बात है। एक घर में कई धर्मों के लोग देखे जा सकते हैं। पर ऐसा सम्भव नही है कि आप एक संस्कार एक धर्म से करें और दूसरा संस्कार दूसरे

धर्म से। अपने मनपसन्द के किसी एक धर्म को अपनायें।

प्रश्न (4) - हमें अपने धर्म व जाति पर गर्व करना चाहिये।

उत्तर - अगर आपको अपने धर्म व जाति में सम्मान मिलता है तो जरूर गर्व करें, किसी के कहने से नहीं। जैसे ब्राह्मण अपने धर्म व जाति पर गर्व कर सकता है क्योंकि वह फर्स्ट क्लास हिन्दू है। पर क्षत्रिय (सेकंड क्लास हिन्दू), वैश्य (थर्ड क्लास हिन्दू) व शूद्र (फोर्थ क्लास हिन्दू) ऐसा गर्व नहीं कर सकते। वे धन, विद्या, बल और बुद्धि में किसी से कम नहीं तो फर्स्ट क्लास हिन्दू क्यों नहीं।

प्रश्न (5) - सभी धर्म एक जैसे होते हैं।

उत्तर - ऐसा नही है। सभी धर्मों का विश्लेषण ऊपर किया जा चुका है जिससे अंतर साफ पता चलता है। इसलिए सबसे अनुकूल धर्म को अपनाना अच्छे भविष्य, सम्मान और उन्नति के लिए अच्छा रहेगा।